VEER KUNWAR SINGH UNIVERSITY
ARA, BIHAR

दो वर्षीय
बैचेलर ऑफ एजुकेशन कार्यक्रम
Two year
Bachelor of Education(B.Ed.) Programme

पाठ्यचर्या की रूपरेखा एवं पाठ्यक्रम
Curriculum Framework and Syllabus

An Overview of the yearly distribution of Courses

Year-1

Code	Course Title	Marks			
		Credit	Internal	External	Total
C-1	Childhood and Growing up	4	20	80	100
C-2	Contemporary India and Education	4	20	80	100
C-3	Learning and Teaching	4	20	80	100
C-4	Language across the Curriculum	2	10	40	50
C-5	Understanding Disciplines and Subject	2	10	40	50
C-6	Gender, School and Society	2	10	40	50
C-7a	Pedagogy of a School Subject Part-I	2	10	40	50
EPC-1	Reading and Reflection on Texts	2	10	40	50
EPC-2	Drama and Art in Education	2	10	40	50
EPC-3	Critical Understanding of ICT	2	10	40	50
Engagement with the field: Tasks and Assignments for Course 1-6 & 7a		–	–	–	–
	Total	**26**	**130**	**520**	**650**

- One credit is equal to 16 hours for theory and for practicum 32 hours.
- Internship in schools will be four weeks in the first year.

Year-2

Code	Course Title	Marks			
		Credit	Internal	External	Total
C-7b	Pedagogy of a School Subject Part-II	2	10	40	50
C-8	Knowledge and Curriculum	4	20	80	100
C-9	Assessment for Learning	4	20	80	100
C-10	Creating an Inclusive School	2	10	40	50
C-11	**Optional Courses** (the following four options)	2	10	40	50
	(a) Basic Education				
	(b) Health, Yoga and Physical Education				
	(c) Guidance and Counselling				
	(d) Environmental Education				
EPC-4	Understading the Self	2	10	40	50
School Internship		10	200*	50*	250
Engagement with the Field : Tasks and Assignments for Courses 7B & 8-10					
	Total	**26**	**280**	**370**	**650**

- Internship in schools will be 16 weeks in the second year.
- The examination of core courses, pedagogy of school subjects and optional courses (C-1, C-2, C-3, C-4, C-5, C-6, C-7a, C-7b, C-8, C-9, C-10 and C-11) will be conducted by the University, while EPC-1, EPC-2, EPC-3 & EPC-4 will be evaluated internally.

Marking Scheme for Practicum of Core, EPCs, and Optional Courses

	Break up	Marks
Courses with internal marks 20	Internal Test	10
	Assignments, Projects, Classroom participation and Regularity*	10
	Total	**20**

	Break up	Marks
Courses with internal marks 10	Internal Test	05
	Assignments, Projects, Classroom participation and Regularity*	05
	Total	**10**

Index

Core Courses

S. No.	Code	Course Name	Page No.
1.	C-1	Childhood and Growing Up FM 20	
2.	C-2	Contemporary India and Education 20	
3.	C-3	Learning and Teaching 20	
4.	C-4	Language across the Curriculum 10	
5.	C-6	Gender, School and Society 10	
6.	C-8	Knowledge and Curriculum ~~20~~	
7.	C-9	Assessment for Learning	
8.	C-10	Creating an Inclusive School	

Enhancing Professional Capacities (EPC)

S. No.	Code	Course Name	Page No.
9.	EPC-1	Reading and Reflection on Texts 10	
10.	EPC-2	Drama and Art in Education 10	
11.	EPC-3	Critical Understanding of ICT 10	
12.	EPC-4	Understanding the Self	

Courses related to Subject and Pedagogy

S. No.	Code	Course Name	Page No.
13.	C-5	Understanding Disciplines and Subject 10	
14.	C-7a	Pedagogy of a School Subject Part-I 10	
15.	C-7b	Pedagogy of a School Subject Part-II	

Optional Courses

S. No.	Code	Course Name	Page No.
16.	C-11(a)	Basic Education	
17.	C-11(b)	Health, Yoga and Physical Education	
18.	C-11(c)	Guidance and Counselling	
19.	C-11(d)	Environmental Education	
20.		School Internship	

CORE COURSES (CC)

Course Code	Course Title		Marks		
			Practicum	Theory	Total
C–1	Childhood and Growing Up	1st Year	20	80	100
C–2	Contemporary India and Education	1st Year	20	80	100
C–3	Learning and Teaching	1st Year	20	80	100
C–4	Language across the Curriculum	1st Year	10	40	50
C–6	Gender, School and Society	1st Year	10	40	50
C–8	Knowledge and Curriculum	2nd Year	20	80	100
C–9	Assessment for Learning	2nd Year	20	80	100
C–10	Creating an Inclusive School	2nd Year	10	40	50

C-1
Childhood and Growing Up
बचपन और विकास

Unit-1	
शिक्षार्थी : बचपन और विकास	**Learner : Childhood and development**
• बचपन की अवधारणा : ऐतिहासिक व समाकालीन परिप्रेक्ष्य; प्रमुख विमर्श • बचपन के दौरान प्रमुख कारक : परिवार, पड़ोस, समुदाय और विद्यालय • बच्चे, बचपन और उनका विकास : समकालीन वास्तविकता, बिहार के विशेष संदर्भ में	• Concept of Childhood : Historical and contemporary perspectives; major discourse • Key Factors during Childhood: Family, Neighborhood, Community and School • Children, Childhood and their development: The Contemporary realities with special focus on Bihar

बच्चे तथा बचपन की संकल्पना काल व स्थान के अनुसार सदैव बदलती रही है। अतः ऐतिहासिक विकास की मोटी–मोटी समझ से इस इकाई की शुरूआत करना उपयुक्त होगा। ऐतिहासिक विकास के अंतर्गत बच्चों और बचपन को लेकर अलग–अलग काल व समाज में बनी धारणाओं की चर्चा की जाएगी। बचपन को प्रभावित करनेवाले कारकों की चर्चा के साथ–साथ उनके द्वारा बच्चे पर क्या प्रभाव पड़ता है, इसकी संक्षिप्त चर्चा यहां होगी। विकास के मामले में भी बच्चे का बचपन बहुत महत्वपूर्ण है, इसलिए बचपन की संकल्पना के साथ–साथ बच्चों के विकासात्मक पक्ष की चर्चा भी करनी होगी, लेकिन यहां पर विकास के आयामों को बचपन पर ही केन्द्रित रखा जाएगा, उससे आगे की चर्चा आगे की इकाइयों में की जाएगी।

Unit-2	
मानव विकास की समझ	**Understanding Human Development**
• मानव विकास में प्रमुख अवधारणाएं : वृद्धि, परिपक्वता एवं विकास की अवधारणा; वृद्धि रेखा तथा मानव विकास के संदर्भ में इसकी उपयोगिता; विकास के बुनियादी सिद्धांत • शिक्षार्थी का विकास : शारीरिक, संज्ञानात्मक, भाषायी, भावात्मक, सामाजिक व नैतिक; इनके बीच का अंर्तसम्बंध और शैक्षिक निहितार्थ (पियाजे, इरिक्सन, कोह्लबर्ग और गिलिगन के सिद्धांतों के विशेष संदर्भ में)	• Major Concept in Human Development: Growth, Maturation and Development; Growth Curve and its utility in the context of Human Development; Basic Principles of Development • Development of learner: physical, cognitive, language, emotional, social and moral; their interrelationships and implications for teachers (special reference to theories given by Piaget, Erikson, Kohlberg and Giligan).

मानव के विकास के संदर्भ में कई अवधारणाएं निरन्तर आती रही हैं, जिसमें बचपन से लेकर बुढ़ापे तक के जीवन विकास को समझा जाता रहा है। इस इकाई का जोर मानव विकास के कुछ महत्वपूर्ण अवधारणाओं को समझने पर है जिससे बच्चों व किशोरों के विकास को लेकर शिक्षकों की विस्तृत समझ बन सके। यहां मानव विकास से सम्बंधित कुछ विवादित मुद्दों की भी चर्चा की गयी है जिसके प्रति सुविज्ञ दृष्टिकोण विकसित किया जाएगा। इकाई के तीसरे बिन्दु के अंतर्गत, कुछ प्रमुख सिद्धांतों की विशेष चर्चा करते हुए शिक्षार्थी के विकास के शारीरिक, भाषायी, भावात्मक, सामाजिक व नैतिक विकास को समझने की कोशिश की गयी है।

Unit-3	
किशोरावस्था में शिक्षार्थी	**Learner in Adolescence**
• किशोरावस्था की अवधारणा : रूढ़िगत मान्यताएं, सही समझ की जरूरत, प्रमुख मुद्दे और कारक • किशोरावस्था को विशेष ध्यान में रखते हुए विकास की अवस्थाओं एवं उनकी विशेषताओं की समझ • किशोरावस्था में शिक्षार्थियों की गतिविधियां, आकांक्षाएं, द्वंद एवं चुनौतियां, और उनसे बर्ताव करने के तरीके	• Concept of Adolescence: stereotypes, need of right understanding, major issues and factors • Understanding stages of development and their characteristics with special emphasis on adolescence • Activities, aspirations, conflicts and challenges of an adolescent learner and ways to deal with them.

बी.एड. करनेवाले प्रशिक्षुओं को माध्यमिक स्तर (कक्षा 6 से 12) की कक्षाओं में शिक्षण करना होता है जिसमें मूलतः किशोरावस्था में बच्चे होते हैं। अतः इस इकाई में किशोरावस्था की विस्तृत समझ अर्थात विकास की अवस्थाएं, उनकी विशेषताएं एवं चुनौतियां, आदि पर चर्चा की जाएगी जिससे कि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के मन एवं व्यवहार दोनों को समझते हुए अपने शिक्षण को कर पाएं। यहां भी यह बात लागू होती है कि किशोरावस्था भी कोई एक निश्चित संकल्पना नहीं है। समाज, जगह और संदर्भ के अनुसार, इसके प्रति सोच में कई अंतर है, इसलिए इसकी समझ बनाते हुए बिहार में किशोर–किशोरियों की स्थिति का विश्लेषण भी इस इकाई में किया जाएगा। किसी भी व्यक्ति के जीवन में किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण काल होता है जिसमें वह अपने विकास के कई नये पहलुओं से परिचित होता है और उनसे अंतःक्रिया के माध्यम से व्यक्ति की जो सोच बनती है वह उसके आगे के जीवन को आकार देती है। अतः समाज में किशोर–किशोरियों के साथ कैसा बर्ताव किया जाए, यह एक अहम मुद्दा है क्योंकि उसी बर्ताव पर उसके जीवन की आगे का निर्णय टिका होता है। इन बातों को ध्यान में रखकर इस इकाई में किशोरों के संदर्भ में शिक्षा कैसी हो, तथा उसमें सबकी क्या भूमिका होनी चाहिए, इस पर विमर्श को प्रस्तुत किया जाना है। यह इकाई एक प्रकार से कई नयी संकल्पनाओं से परिचय कराती है।

Unit-4	
समाजीकरण और शिक्षार्थी का संदर्भ	**Socialization and the Context of Learner**
• समाजीकरण की अवधारणा : प्रमुख विमर्श, इसके माध्यम के रूप में शिक्षा तथा प्रमुख कारक • समाजीकरण की संस्थाएं एवं उनकी भूमिका : परिवार, समुदाय, विद्यालय, मित्रमंडली, शिक्षक, मीडिया, बाजार, अन्य औपचारिक व अनौपचारिक संस्थाएं; सामाजिक संस्थाएं जैसे संस्कृति, वर्ग, जाति, जेण्डर आदि • समाजीकरण की प्रक्रिया और सामाजिक वास्तविकताएं : असमानता, और इनका बच्चों व किशोरों पर पड़ता प्रभाव	• Concept of Socialization: major perspectives, education as a medium and key factors • Institutions of Socialization and their role: The context of family, community, school, peers, teacher, media, market, other formal and informal organizations; social institutions such as culture, class, caste, etc. • Process of Socialization and social realities (with special focus on Bihar): Inequalities, and their impact on learner

चाहे बचपन हो या किशोरावस्था या आगे का विकास, इन सब के दौरान समाजीकरण की प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है लेकिन इस प्रक्रिया के प्रकृति में कई परिवर्तन होते रहते हैं। अतः इस इकाई में समाजीकरण की प्रक्रिया के जटिल संरचना एवं उसके कारकों की विस्तृत चर्चा करनी है। समाजीकरण के प्रमुख परिप्रेक्ष्यों में मूलतः प्रकार्यात्मक और आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्यों को समझा जाएगा। समाजीकरण को लेकर एक सैद्धांतिक समझ भी बने, इसके लिए ब्रोनफ्रेनब्रेनर के मॉडल की चर्चा की गयी है जो बच्चे के परिवेश के कारकों, उनकी स्थिति एवं प्रभाव की उपयोगी समझ प्रस्तुत करता है। यह इकाई समाजीकरण से जुड़े अन्य अवधारणाओं की भी समझ देगा। अतः अन्य अवधारणाओं की बात तो यहां होगी लेकिन केवल समाजीकरण से जोड़कर और उसमें शिक्षा की भूमिका को रेखांकित करते हुए। समाजीकरण की संस्थाएं मूर्त भी हैं और अमूर्त भी, अतः दोनों की समेकित समझ इसमें प्रस्तुत की जाएगी। किसी व्यक्ति की सामाजिक अस्मिता को समाजीकरण की संस्थाएं किस प्रकार निर्मित करती हैं, उसकी संक्षिप्त समझ भी यहां प्राप्त की जाएगी।

Unit-5	
शिक्षार्थियों में विविधता की समझ	**Understanding diversity in learners**
• मानवीय विविधता की प्रकृति एवं अवधारणाः सामाजिक एवं सांस्कृतिक विविधता; • मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के आधार पर भिन्नताओं के आयाम : बौद्धिकता, क्षमता, अभिरूचि, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता, व्यक्तित्व • विविध संदर्भों के शिक्षार्थियों की समझ : सामाजिक, सांस्कृतिक, समुदाय, धर्म, जाति, वर्ग, जेण्डर, भाषा और भौगोलिक स्थिति, मीडिया, बाजार, तकनीक व वैश्वीकरण • विद्यालय में विविधता की समझ	• Nature and Concept of Human Diversity: Social and Cultural Diversity; • Dimensions of differences: intelligence, abilities, interest, aptitude, creativity, personality • Understanding children and adolescents from diverse contexts: social, cultural, community, religion, caste, class, gender, linguistic and geographic location, media, market, technic and universal • Understanding Diversity in School

विद्यालय इस बात की अक्सर अनदेखी करता रहता है कि वहां आनेवाले बच्चे अलग–अलग पृष्ठभूमि से आते हैं और सभी बच्चों का सीखने का अपना अलग तरीका हो सकता है। तभी, किसी भी विद्यालय के कोई भी विद्यार्थी एक दूसरे के समान नहीं होते हैं, सबमें भिन्न–भिन्न अभिरूचियां, क्षमताएं एवं सोंच होती है। अतः शिक्षक को शिक्षार्थियों की विभिन्नताओं को पहचानने और उसके अनुरूप काम करने की समझ जरूर होनी चाहिए। इस इकाई में शिक्षार्थियों की कुछ बुनियादी विभिन्नताओं की चर्चा की गई है। इकाई के विभिन्न विषय वस्तुओं के अंतर्गत कुछ तकनीकी शब्दों का प्रयोग भी किया गया है जिनके प्रति जागरूकता कम और भ्रांतियां ज्यादा हैं। यह इकाई उनको स्पष्ट करने का प्रयास करेगी। साथ ही, शिक्षार्थियों की विभिन्नताओं को केवल समझना ही जरूरी नहीं है बल्कि उनके प्रति विद्यालय, समाज और शिक्षक क्या नजरिया अपनाता है, इसका विश्लेषण करना तथा आवश्यकतानुरूप उसमें सुधार लाने के प्रति संवेदनशीलता महत्वपूर्ण है जिसपर यह इकाई केन्द्रित है।

C-2
Contemporary India and Education
समकालीन भारत और शिक्षा

Unit-1	
भारत में शिक्षा : अतीत से वर्तमान तक	**Education in India: From Past to Present**
• वैदिक कालीन एवं बौद्ध कालीन शिक्षा व्यवस्था पर चिंतन–मनन, गुण–दोष तथा प्राचीन शिक्षा केन्द्र • मध्यकाल में शिक्षा : मकतब, मदरसा व संस्कृत शिक्षा • अठारहवीं शताब्दी के दौरान की देशज शिक्षा व्यवस्था	• Reflecting on Education during Vedic & Buddhist Period, ancient education institutions • Education during medieval period: Maktab, Madarsa and Sanskrit Education • Indigenous System of Education during eighteenth century

आज भारत में जिस प्रकार की शैक्षिक व्यवस्था है वह केवल वर्तमान की देन नहीं है बल्कि उसका अपना अतीत भी है जिसको जानने से एक प्रशिक्षु के समझ के दायरे का विस्तार होगा। अपने अतीत की शिक्षा को समझना इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि उससे शिक्षा के समृद्ध संस्कृति का भी बोध होता है और शिक्षा के ऐतिहासिक महत्व का भी ज्ञान होता है। इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए इस इकाई में यह कोशिश की गई है कि प्रशिक्षुओं को भारत के शैक्षिक इतिहास के व्यापक स्वरूप से विश्लेषणात्मक परिचय कराया जाए। इस दिशा में, सिर्फ औपनिवेशिक ही नहीं बल्कि उससे पहले के कालों के संदर्भ में भी शिक्षा को समझने का प्रयास है। शिक्षा के इतिहास को यहां हड़प्पा सभ्यता से शुरु किया जा रहा है जो कि स्वयं में शिक्षा के प्रचलित इतिहास में एक नया पन्ना जोड़ने जैसा है। हालांकि इसके अति प्राचीन होने के कारण उपलब्ध साक्ष्यों एवं अनुमानों के आधार पर ही संक्षिप्त विश्लेषण किया जाएगा लेकिन वह विश्लेषण हमारे शिक्षायी चिंतन के प्रस्थान बिन्दु को समझने के लिए अहम है। प्राचीन शैक्षिक व्यवस्था को समझने के लिए वैदिक, बौद्ध की शिक्षा पर भी चर्चा की जाएगी। हमारे इतिहास में कई शैक्षिक संस्थाओं व व्यवस्थाओं की भी उत्पति हुई है उनका भी संक्षिप्त परिचय इस इकाई से प्राप्त होगा। इस इकाई मे देशज शैक्षिक व्यवस्था पर विशेष बात की जाएगी। साथ ही, औपनिवेशिक काल के उन तमाम शैक्षिक प्रयासों की भी चर्चा की जाएगी जिसका असर आज की शिक्षा व्यवस्था में ही व्याप्त है।

Unit-2	
ब्रिटिश तथा स्वतंत्रता पश्चात शिक्षा	**British & after independence Education**
• ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान उभर कर आयी शिक्षा व्यवस्था : मिशनरी स्कूल, ब्रिटिश राज के अंतर्गत गठित औपचारिक शिक्षा की व्यवस्था; भारतीयों द्वारा गठित शैक्षिक संस्थाएं एवं आंदोलन (जैसे कि यंग बंगाल आंदोलन, देवबंद, आर्यसमाज, अलीगढ़, सत्यशोधक समाज, जामिया स्कूल, बुनियादी शिक्षा) • स्वतंत्रता पश्चात, भारत में शिक्षा का विकास – प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की समस्याएँ • बिहार में शिक्षा का ऐतिहासिक विकास–सभी के लिए शिक्षा व्यवस्था, शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाएँ	• Missionaries, Formal education system under British administration, Different Education systems or movements founded by Indians (i.e. Young Bengal Movement, Deoband, Aryasamaj, Aligarh, Satya Shodhak Samaj, Jamia school, Basic education) • Post-Independence development of Education System in India- Primary, Secondary & Higher Education & its Problems • Historical development of Education in Bihar, Education system for all, Teachers training Institutions.

इस इकाई में ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान उभर कर आई शिक्षा व्यवस्था पर गहन चिंतन एवं मनन किया जाएगा और साथ ही गठित शैक्षणिक संस्थाएं एवं आंदोलनों की विस्तृत चर्चा की जाएगी इसके साथ–साथ स्वतंत्रता पश्चात के शैक्षिक विकास की चर्चा में प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा की समस्याओं को भी दृष्टिगत रखते हुए विस्तार से चर्चा की जाएगी जिसमें बिहार के शैक्षिक विकास, शिक्षा व्यवस्था एवं शिक्षक प्रशिक्षण संस्थाओं का विशेष उल्लेख किया जाएगा।

Unit-3	
शिक्षा की समझ	Understanding Education
• शिक्षा : महत्व एवं प्रकृति; 'शिक्षित व्यक्ति कौन है' इसका विश्लेषणात्मक समझ • भारतीय चिंतकों के शिक्षासम्बंधी विचारों का विश्लेषणात्मक समझ : सैयद अहमद खां, ज्योतिबा फुले, स्वामी विवेकानन्द, श्री अरविन्दो, पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ. जाकिर हुसैन, मौलाना अबुल कलाम आजाद, डॉ. एस. राधाकृष्णन, डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, जे. कृष्णमूर्ति • पाश्चात्य चिंतकों के शैक्षिक विचारों का विश्लेषणात्मक समझ : प्लेटो, रूसो, जॉन डीवी, पॉलो फ्रेरे • गांधी के 'हिन्द स्वराज' और टैगोर के 'शिक्षा' के माध्यम से शिक्षा की समझ	• Education: need and nature; analytical understanding of the notion of an educated person Analyzing the thoughts of various Indian thinkers: Sir • Syed Ahmed Khan, Jyotiba Phule, Swami Vivekananda, Sri Aurobindo, Pandit Madan Mohan Malviya, Dr. Zakir Husain, Maulana Abul Kalam Azad, Dr. S. Radhakrishnan, Dr. B.R. Ambedkar and J. Krishnamurti • Analyzing the thoughts of various western thinkers: Plato, Rousseau, John Dewey, Paulo Freire Understanding of Education through *'Hind Swaraj'* by Gandhi and *'Shiksha'* by Rabindranath Tagore

शिक्षा की प्रकृति क्या हो, यह क्यों महत्वपूर्ण है तथा 'शिक्षित व्यक्ति कौन है' इन तीनों सवालों का जवाब काल और संदर्भ के अनुसार सदैव बदलता रहा है और आगे भी बदलता रहेगा, लेकिन अमूमन हम इनके उत्तरों को शाश्वत मानते है। इसीलिए इस इकाई की शुरूआत में शिक्षा की बदलती प्रकृति जिसमें औपचारिक–अनौपचारिक–निरौपचारिक, पारम्परिक–नवाचारी आदि के महत्व तथा 'शिक्षित' होने के मायने पर विमर्श किया जाएगा। आगे उसी विमर्श को बढ़ाने के लिए तमाम भारतीय चिंतकों के विचारों का विश्लेषण भी इसमें किया जाएगा। इसके अंतर्गत सर सैयद अहमद खां, ज्योतिबा फूले, पंडित मदन मोहन मालवीय, डॉ. जाकिर हुसैन, जे. कृष्णमूर्ति ऐसे विचारक हुए जिन्होंने अपने द्वारा स्थापित संस्थानों के माध्यम से शिक्षा को एक अलग नजरिए से देखने की कोशिश की। उन संस्थानों में उन्होंने 'शिक्षा क्या, क्यों और कैसे' पर सम्पूर्ण विमर्श किया। साथ ही, मौलाना अबुल कलाम आजाद जो स्वतंत्र भारत के पहले शिक्षा मंत्री रहे तथा नए भारत के शिक्षा की कल्पना में भूमिका निभायी, डॉ. एस. राधाकृष्णन जो आजादी के बाद शिक्षा पर बने पहले आयोग के अध्यक्ष थे तथा भारतीय दर्शन के ज्ञाता थे इस नाते उन्होंने शिक्षा को एक अलग नजरिए से देखने की कोशिश की। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर के शैक्षिक चिंतन का प्रभाव संविधान के प्रावधानों पर भी पड़ा है, इसलिए उससे रूबरू होना अपने आप में महत्वपूर्ण है। यदि स्वामी विवेकानन्द और श्री अरबिन्दो की बात करें तो इन्होंने शिक्षा के भारतीय दर्शन को प्रस्तुत किया और इन्होंने भी अपने दर्शन पर आधारित शैक्षिक संस्थानों का निर्माण किया। यहां स्पष्ट करना है कि इस इकाई में इन सब चिंतकों के शिक्षा सम्बंधी चयनित विचारों को केवल प्रधान माना गया है न कि उनकी जीवनियों को। शिक्षा को लेकर कई महत्वपूर्ण परिप्रेक्ष्य पाश्चात्य चिंतकों के माध्यम से भी दिया गया, अतः उनके विचारों को भी संक्षेप में यहां शामिल किया गया है। इकाई के अंत में गांधी द्वारा रचित 'हिन्द स्वराज' और टैगोर की कृति 'शिक्षा' के मौलिक अध्ययन के माध्यम से शिक्षा की प्रकृति को समझा जाना है। इन दोनो विचारकों की रचना को इसलिए अलग से लिया गया है क्योंकि इन्होंने भारत में शैक्षिक चिंतन को बहुत ही गहराई से प्रभावित किया है।

Unit-4	
समकालीन भारतीय शिक्षा और इसके मुद्दें	Contemporary Indian Education and its concerns
• शिक्षा का सार्वभौमीकरण : शिक्षा का अधिकार तथा शिक्षा तक बच्चों की सार्वभौमिक पहुंच • शिक्षा में असमानता : सरकारी व प्राईवेट विद्यालयों का संदर्भ, विद्यालयों की शहरी व ग्रामीण अवस्थिति का प्रभाव; समाजिक–सांस्कृतिक–आर्थिक आयाम • राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय तनाव, अशांति, सामुदायिक द्वंद, सामाजिक अन्याय का शिक्षा पर पड़ते प्रभाव की समझ • समान विद्यालय प्रणाली की संकल्पना : सी.एस.एस. रिपोर्ट (बिहार सरकार) के विशेष संदर्भ में	• Universalisation of School Education: Right to Education and Universal Access to education • Inequality in schooling: Govt.-private schools, rural-urban schools; Social-cultural-economical aspects • Issues of National and International conflicts, unrest, social injustice, communal conflict • Idea of common school system: with special focus on CSS Report (Govt. of Bihar)

इस इकाई में में शिक्षा के उन मुद्दों की समझ बनायी जाएगी जिससे आज के शिक्षक जुझ रहे हैं। ये मुद्दे इसलिए भी महत्वपूर्ण है क्योंकि इससे शिक्षक के कार्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है। अतः ये मुद्दे क्यों आएं, इनकी पृष्ठभूमि क्या है और इनके प्रति एक शिक्षक की क्या भूमिका है, इन सब बिन्दुओं की चर्चा पर ही इस इकाई को केन्द्रित रखा गया है। इनमें से कई मुद्दे ऐसे हैं जो शिक्षा के साकारात्मक पक्ष को दिखाते हैं तो कुछ ऐसे भी मुद्दे हैं जो हमारी शिक्षा व्यवस्था के कमजोरियों को उजागर करते हैं। हमारे देश के तमाम विद्यालयों के असल सच को भी इस इकाई में समझा जाएगा।

Unit-5	
शैक्षिक नीतियों के आलोक में विद्यालय की समझ	**Understanding School in relation to Education Policies**
• विद्यालय का नाम एवं प्रकार : नीतिगत परिप्रेक्ष्य के आलोक में विकास; भारत और विशेषरूप से बिहार में विद्यालयों की समकालीन संरचना को समझने के स्रोत के रूप में • विद्यालय की पाठ्यचर्या : नीतिगत परिप्रेक्ष्य के आलोक में विकास; विद्यालयी पाठ्यचर्या में समकालीन बदलावों की समझ, बिहार विशेष को ध्यान में रखते हुए • विद्यालय में मूल्यांकन व्यवस्था : प्रमुख बदलावों से सम्बंधित नीतिगत, परिप्रेक्ष्य, बिहार के विद्यालयों में मूल्यांकन व्यवस्था का संदर्भ	• Name and types of the School: Development in the light Policy perspectives; As a source to understand the contemporary structure of schools in India as well as Bihar • Curriculum of the School: Major developments with reference to Policy perspectives; Understanding the development of the contemporary curriculum changes of schools with special focus on Bihar • Evaluation system in a school: Policy perspectives about major changes; the Context of Evaluation system in schools of Bihar

इस इकाई का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को विद्यालय के विभिन्न आयामों का विश्लेषण इस प्रकार करने का अवसर प्रदान करना है जिससे उन्हें देश की प्रमुख शिक्षा नीतियों तथा उनके विकास क्रम का ज्ञान अपनी संस्था के संदर्भ में मिल सके। आमतौर पर शिक्षक प्रशिक्षण संस्थानों में 'शिक्षा का इतिहास' एक शवुक विषय के रूप में पढ़ाया जाता है। इसमें शिक्षा से संबंधित ऐतिहासिक तथ्यों को प्रमुखता से चिन्हित किया जाता है, परन्तु ये तथ्य किसी संदर्भ से नहीं जुड़ पाते और इस कारण देश की शिक्षा नीतियों को लेकर एक विहंगम तथा संवेदित दृष्टि का विकास करने में असमर्थ रहते हैं। एक अन्य आम प्रवृति देश की शैक्षिक नीतियों को सिर्फ उनकी प्रमुख संस्तुतियों के दर्पण में देखने की है। किसी भी शिक्षा नीति के बनाये जाने की प्रक्रिया में उस समय की आवश्यकताएँ तथा बाध्यताओं को भी जानना महत्त्वपूर्ण है। एक शिक्षा नीति से दूसरी शिक्षा नीति का सफर उपलब्धियों और अधूरे रह गये लक्ष्यों की मिली–जुली कथा कहता है। अतः शिक्षा नीतियों को किस रीति से पढ़ाया जाए, यह महत्त्वपूर्ण है। यह इकाई इस बात का प्रयास करती है कि प्रशिक्षु किसी एक विद्यालय को आधार बनाकर शिक्षा नीतियों एवं आयोगों की अनुशंसाओं को लागू किये जाने में निहित चुनौतियों को समझ सके। किसी विद्यालय का नाम, उसकी स्थापना से लेकर आज तक में किये गये परिवर्तन स्वयं में शिक्षा नीति के विकास क्रम का संकेत होते हैं। विद्यालय का भवन स्वयं में विद्यालय के विकास की कहानी समेटे रहता है। विद्यालय में पढ़ाए जा रहे विषयों का समूहीकरण अथवा विभाजन किस पाठ्यचर्या के आधारों पर किया गया है, इसे नीतियों के आलोक में जानना चाहिए। साथ ही, विद्यालय में होनेवाली मूल्यांकन व्यवस्था का क्या इतिहास रहा है, इन सबकी समझ से प्रशिक्षु विभिन्न शैक्षिक नीतियों को विद्यालय के भीतर समझ पाने में सक्षम हो सकेंगे। उपरोक्त बिन्दुओं को बिहार के संदर्भ में भी विशेष रूप से समझा जाएगा।

Suggested readings

C-3
Learning and Teaching
सीखना और सिखाना

Unit-1	
अधिगम से सम्बन्धित अवधारणाएँ	**Concepts related to Learning**
• अधिगम/सीखना : विभिन्न विचारों से परिचय • अधिगम को प्रभावित करनेवाले प्रमुख कारक • सीखने में एकाग्रता की भूमिका एवं इसका संवर्धन • अंतर्सम्बंधों की विश्लेषणात्मक समझ : अधिगम और विकास, अधिगम और अभिप्रेरणा, अधिगम और बुद्धि	• Learning: Introduction to multiple views • Major factors affecting learning • Role of concentration in learning and its enhancement • Analytical understanding of relations: Learning and Development; Learning and Motivation; Learning and Intelligence

अधिगम या सीखने को किसी एक ढंग से परिभाषित नहीं किया जा सकता क्योंकि इसके विषय में अलग–अलग समाज एवं संस्कृतियों में भिन्न–भिन्न मान्यताएं हैं जो लोकसंस्कृतियों, लोकोक्तियों, रीति–रिवाज, संस्कार या फिर सामाजिक परम्पराओं के रूप में वहां विद्यमान हैं। इस विषय में, अलग–अलग व्यक्तियों की भी अपनी–अपनी मान्यताएं हो सकती हैं जैसे कि शिक्षार्थी, अध्यापक, अभिभावक, आदि। अतः इस इकाई की शुरूआत अधिगम से संम्बंधित उन सामान्य प्रचलित मान्यताओं को जानने से की जाएगी। उन मान्यताओं का कुछ हद तक विश्लेषण भी किया जाएगा। लेकिन उनके पूर्ण विश्लेषण के लिए कुछ सैद्धांतिक आधारों की जरूरत होगी जिनकी चर्चा अगली इकाई में है। इसलिए इस इकाई में उनका सामान्य सा विश्लेषण ही होगा। इस इकाई में अधिगम को प्रभावित करनेवाले कारक यथा व्यक्तिगत, सामाजिक, संस्थागत, मूर्त व अमूर्त आदि की भी सामान्य समझ प्राप्त की जाएगी। यहां एक महत्वपूर्ण कारक 'एकाग्रता' की विशेष चर्चा की जाएगी क्योंकि भारतीय देशज परम्परा में इस कारक को विशेष स्थान दिया जाता रहा है। साथ ही इस इकाई में अधिगम से सम्बंधित अन्य अवधारणाओं की भी बात की जाएगी। अधिगम की प्रक्रिया का विकास, अभिप्रेरणा और बुद्धि से क्या अंतर्सम्बंध है इसको विशेष रूप से इस इकाई में समझा जाएगा। अधिगम और विकास के अंतर्सम्बंध की मान्यताओं पर चर्चा, अभिप्रेरणा के सिद्धांत (आंतरिक व बाह्य अभिप्रेरणा, प्रक्रिया आदि) का विवरण और बुद्धि से सम्बंधित विकासात्मक सिद्धांतों (बिने, गिलफर्ड, गार्डनर) का विश्लेषण यहां किया जाएगा।

Unit-2	
अधिगम के सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य	**Theoretical perspectives of Learning**
• अधिगम से सम्बंधित सिद्धांतों के विकास का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य • अधिगम से सम्बंधित सिद्धांतों की समझ : व्यवहारवादी, मानवतावादी, संज्ञानवादी, सूचना–प्रक्रियाकरण मत, सामाजिक–सर्जनवादी दृष्टिकोण	• Reflecting on the development of theories of learning: Historical perspective • Theories related to Learning: Behaviourist, Cognitivist, Information-processing view, Humanist, Social-constructivist

इस इकाई की शुरूआत अधिगम के सिद्धांतों के ऐतिहासिक विकास के संक्षिप्त परिचय से की जाएगी जिसमें मनोविज्ञान से अधिगम के सिद्धांतों के विशेष सम्बंध पर चर्चा की जाएगी। इसके बाद अधिगम से सम्बंधित विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्यात्मक एवं विश्लेषणात्मक समझ प्रस्तुत की जाएगी। इस इकाई में दो बिन्दु ही लिये गये हैं क्योंकि दूसरा बिन्दु स्वयं में बहुत विस्तृत है जिसके अंतर्गत दिए गए विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा की जाएगी। हालांकि अब तक यह देखा गया है कि उन सिद्धांतों को बहुत ही शवुक रूप में ही प्रस्तुत किया जाता रहा है जिसमें उनसे सम्बंधित प्रयोगों का विवरण मात्र ही दिया जाता है जिससे प्रशिक्षुओं की 'सीखने' को लेकर कोई उपयोगी दृष्टिकोण नहीं बन पाता था। अतः विभिन्न सिद्धांतों की चर्चा को उपयोगी बनाने के लिए तीन निर्देशक बिन्दु भी निर्धारित कर दिया गया है। यदि सिद्धांतों की बात करें तो व्यवहारवादी में पैव्लव एवं स्कीनर, मानवतावादी में मैस्लो, संज्ञानवादी मे पियाजे, सूचना–प्रक्रियाकरण मत में एटकिंसन, सामाजिक–सर्जनवादी दृष्टिकोण में वाइगोत्सकी एवं बैण्डुरा जैसे मनोवैज्ञानिकों की विशेष चर्चा की जाएगी। अधिक जोर संज्ञानवाद और सामाजिक–सर्जनवाद के सिद्धांतों को विस्तार से समझने पर होगा।

Unit-3	
अधिगम और शिक्षण	Learning and Teaching
• अधिगम–शिक्षण प्रक्रिया से संबंधित विविध दृष्टिकोणों की समझ : शिक्षक–केन्द्रित, विषय–केन्द्रित एवं बाल–केन्द्रित; 'ज्ञान के सम्प्रेषक', 'आदर्श', 'सुगमकर्ता' एवं 'सह–अधिगमकर्ता' के रूप में शिक्षक	• Understanding multiple views for learining-teaching process: teacher centric, subject centric and learner centric; Teacher as 'transmitter of knowledge', 'model', 'facilitator', 'co-learner'
• शिक्षण के सामाजिक–सर्जनवादी प्रपरिप्रेक्ष्य एवं इसके निहितार्थों की समझ	• Understaning Social-constructivist perspective of teaching and its implications
• सृजनात्मक अधिगम : अवधारणा एवं शिक्षणशास्त्रीय निहितार्थों की समझ	• The idea of Creative Learning: Concept and its pedagogical implications
• अधिगम–शिक्षण के लिए सुगम माहौल का निर्माण प्रमुख बिन्दु एवं चुनौतियां	• Creating facilitative learning-teaching environments: major points and concerns

इस इकाई में अधिगम और शिक्षण को एक साथ देखने पर बल दिया गया है। पिछली इकाई में अधिगम के सिद्धांतों की समझ पर जोर दिया गया था लेकिन उन सिद्धांतों की समझ तब तक उपयोगी नही है जब तक कि प्रशिक्षु द्वारा उनका कक्षायी माहौल में प्रयोग न किया जाए। यहां इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रशिक्षु अपने द्वारा सीखे गए शैक्षिक सिद्धांतों की उपयोगिता को स्वयं से परखकर देखें। कोई भी सिद्धांत शिक्षण में किस प्रकार से मददगार है इसकी गहन समझ प्रशिक्षुओं को अवश्य मिले। साथ ही, शिक्षण को लेकर जो विविध दृष्टिकोण दिए गए हैं, उनका सिद्धांतों से किस प्रकार जुड़ाव है, इसे भी यहां समझा जाएगा। आज के शैक्षिक विमर्श में सामाजिक–सर्जनवाद का विशेष महत्व है, इसलिए इसको विशेष तौर पर समझा जाएगा। अधिगम–शिक्षण के दौरान कक्षा में कई ऐसी घटनाएं घटती हैं जिनको शिक्षक समझ नहीं पाते हैं और उसकी अनदेखी कर देते हैं जैसे कि बच्चों की सृजनात्मक सोंच एवं प्रतिभा। अतः इस इकाई में सृजनात्मकता को भी अधिगम–शिक्षण का अभिन्न अंग मानते हुए चर्चा की गयी है ताकि वैसे बच्चे छूट न जाए। साथ ही, अधिगम–शिक्षक की चुनौतियों की सैद्धांतिक समझ भी इस इकाई में प्राप्त की जाएगी।

Unit-4	
कक्षायी प्रक्रियाएं एवं सीखने की योजना	Classroom processes and Learning Plan
• कक्षायी प्रक्रियाएं : प्रभावी कारक; प्रमुख चुनौतियां, समय प्रबंधन, शिक्षक का सम्प्रेषण कौशल, शिक्षार्थियों की भूमिका	• Classroom processes: Factors affecting ; major challenges; time management, Communication skills of teacher, role of learners
• विभिन्न कक्षायी गतिविधियों के अनुसार कक्षाकक्ष की बैठक व्यवस्था	• Seating arrangements for various classroom practices
• कक्षायी गतिविधियों को पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र एवं शिक्षण संसाधनों के साथ जोड़ना	• Relating Classroom practices with Curriculum, pedagogy and teaching resources
• कक्षाकक्ष शिक्षण के संदर्भ में माइक्रो–टीचिंग और ब्लूम की टेक्सोनोमी का आलोचनात्मक समझ	• Critical understanding of micro-teaching and Bloom's taxonomy for classroom practices
• 'सीखने की योजना' की अवधारणा को समझना : पारम्परिक पाठ योजना को बदलकर सीखने की योजना का प्रयोग	• Understanding the concept of 'Learning plan': replacing the traditional lesson plan of classroom teaching

सीखने–सिखाने का कार्य कक्षाकक्ष की प्रक्रिया और शिक्षण योजनाओं से जुड़ी हुई है। अतः कक्षाकक्ष की अवधारणा तथा शिक्षण योजना के तौर पर 'सीखने की योजना–लर्निंग प्लान' की व्यापक समझ शिक्षक को होनी चाहिए। इस इकाई में सीखने के विभिन्न सिद्धांतों को कक्षाकक्ष तथा लर्निंग प्लान के निर्माण में किस प्रकार समावेशित करें, इसकी चर्चा की जाएगी।

C-4

Language across the Curriculum

सम्पूर्ण पाठ्यचर्या में भाषा

Unit-1	
शिक्षार्थी और उनकी भाषा	**Learners and their language**
• भाषा का अर्थ, प्रकृति, क्षेत्र, महत्व, कार्य एवं पृष्ठभूमि • भाषा और धर्म, भाषा और कक्षा, साहित्य का भाषा में योगदान • गृहभाषा (मातृभाषा) तथा विद्यालयी भाषा/ द्वितीय भाषा, औपचारिक और अनौपचारिक भाषा • मौखिक और लिखित भाषा–अर्थ, सिद्धान्त, उद्देश्य, महत्व, एवं सह–संबंध	• Meaning, nature, scope, role, importance, functions of language, language background • language and religion, language and Class, role of literature in language • Home language (mother tongue) and school language/second language, Formal and informal language • Oral and written language-meaning, principles, objectives, importance, Co-relation

इस इकाई का उद्देश्य प्रशिक्षुओं को "भाषा क्या है" यह समझने में मदद करना है। भाषा की सबसे प्रचलित परिभाषा यह है कि भाषा संप्रेषण का माध्यम है। परन्तु यह भाषा की बहुत ही सीमित परिकल्पना है। इस इकाई में हम भाषा के विभिन्न पहलुओं के बारे में बातचीत करते हुए यह समझने का प्रयास करेंगे कि भाषा को किन–किन रूपों में समझा जा सकता है? साथ ही साथ, व्याकरण के दृष्टिकोण से ध्वनि, वाक्य एवं संवाद के धरातल पर भाषा की संरचना एवं विशेषताओं को समझने का भी प्रयास करेंगे। हम यह देखते हैं कि बच्चे अपने परिवेश के साथ सहज अन्तःक्रिया करते हुए भाषा सीख जाते हैं। यदि हम भाषा सीखने की इस प्रक्रिया पर ध्यान दें तो हमें यह समझने में मदद मिलेगी कि कक्षा में भाषा सीखने की प्रक्रिया कैसी होनी चाहिए?

Unit-2	
भाषा, कौशल और भाषा प्रयोगशाला	**Language , skills and language laboratory**
• भाषा में मौखिक अभिरूचि, मौखिक सैद्धान्तिक भाषा की अभिरूचि, छात्राध्यापकों में मौखिक हावभाव/भाषण का विकास, सीखने के उपकरण का विचार विमर्श, कक्षा कक्ष में प्रश्न पूछना, पठन–पाठन में शिक्षण कौशल का पाठ्य पुस्तकों द्वारा विकास, गलत उच्चारण की समस्या और समाधान • भाषा कौशल–(एल.एस.डब्ल्यू.आर.–सुनना, बोलना, लिखना, पढ़ना,) अर्थ, महत्व, सहसंबंध, विधियां तथा तकनीकियाँ। • भाषा प्रयोगशाला :– आवश्यकता, महत्व, लाभ, इसकी शिक्षक प्रशिक्षण में उपयोगिता	• Oral aptitude in language, theoretical speech of oral apttitude, development of oral expression/speech in pupil-teacher, discussion as a tool of learning, questioning in class room, developing reading skill through text book, problems and remedies to incorrect pronunciation. • Language skills-(LSWR-Listening, speaking, writing, reading,) Meaning, importance, co-relation, methods and techniques • Language laboratory-Need, Importance, Advantage, Use in teacher's training

हमारे देश में कई प्रकार की विविधताएँ हैं। भाषायी विविधता भी उनमें से एक है। पूरे विश्व में लगभग 5000 भाषाएँ हैं उनमें से करीब 1600 से अधिक भाषाएँ भारत में बोली जाती हैं। भारत के संदर्भ में यह कहना गलत नहीं होगा कि यहाँ अधिकांश व्यक्ति कम–से–कम दो भाषाएँ जानते हैं। यह जानते हुए भी कि भारत एक बहुभाषिक देश है स्कूलों में भाषा शिक्षण में ज़ोर किन्हीं एक या दो विशेष भाषाओं (अमूमन हिन्दी व अंग्रेजी) पर ही होता है। बच्चों की भाषाओं, जो कि इतनी विविधता लिये हुए होती है, उनको भाषा व बोली, शुद्ध भाषा, मानकीकृत भाषा जैसे मुद्दों के बीच दबा दिया जाता है। यह इकाई, भाषायी विविधता व बहुभाषिकता को समझने में मदद करेगी। इकाई में बिहार के बहुभाषिक परिदृश्य को ध्यान में रखते हुए विस्तार से यह चर्चा की जाएगी कि हम इस भाषायी विविधता को स्वयं व बच्चों के भाषा–कौशलों के विकास के लिए एक संसाधन के रूप में उपयोग कैसे कर सकते हैं। भाषा इंसान की सामाजिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इंसान द्वारा सृजित की गई। इंसानों तथा उनकी आवश्यकताओं में अन्तर होता है इस वजह से उनकी भाषा में भी अन्तर होता है। इस कारण भाषा में विविधता तथा स्तरीकरण का गुण पाया जाता है।

C-6
Gender, School and Society
जेण्डर, विद्यालय और समाज

किसी भी समाज के मानवीय होने की कसौटियों में से एक महत्वपूर्ण कसौटी यह है कि उसमें स्त्री और पुरुष के बीच सम्बन्ध कितने समतामूलक हैं। स्त्री और पुरुष के बीच असमानता को रचने के प्रयास बहुत पुराने हैं। अनेक कारणों से इनके बीच असमानता रचने वाले कारकों को पहचानने के प्रयास किये गये। भारतीय समाज तथा शिक्षा में इस प्रकार की असमानताओं के होने को समय–समय पर रेखांकित किया जाता रहा है। इसी प्रकार के प्रयासों में भिन्नता के होने तथा असमानता को रचे जाने के बीच फ़र्क को समझा गया। यह समझ में आने लगा कि स्त्री और पुरुष के बीच भिन्नता प्राकृतिक है लेकिन असमानता समाज द्वारा सृजित है।

इस विषय के माध्यम से प्रशिक्षु यह समझ बनाएँगे कि भिन्नता को असमानता में रूपांतरित करने के तरीके तथा प्रक्रियाएं कौन–कौन सी हैं। वे कौन से तरीके हैं जिनसे मर्द और औरत की छवियों को गढ़ा जाता है। वे इन छवियों को गढ़ने के तर्कों की समीक्षा करने में स्वयं को सक्षम बनाएँगे। प्रशिक्षु, मर्द और औरत की गढ़ी जा रही छवियों के शिक्षा के साथ सम्बन्ध के बारे में समझ बनाते हुए छवियों का लोकतांत्रीकरण और मानवीकरण करने के प्रयासों के बारे में समझ बनाएँगे। वे मर्द और औरत की छवियों को रचने की प्रक्रियाओं को समझकर शिक्षा के जरिये लैंगिक–समानता स्थापित करने की दिशा में स्वयं तथा अन्य एजेंसियों की भूमिका के बारे में समझ बनायेंगे।

Unit-1	
जेण्डर की समझ	**Gender Issues: Key Concepts**
• जेण्डर और लिंग की अवधारणा • जेण्डर पक्षपात, जेण्डर सम्बंधी रूढ़ीगत मान्यताएं, जेण्डर सशक्तिकरण की समझ • भारत में जेण्डर का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य • जेण्डर और पितृसत्ता	• Concept of Gender and Sex • Understanding Gender bias, gender stereotyping, and gender empowerment • Historical perspective of Gender in India • Gender and Patriarchy

Unit-2	
जेण्डर और समाजीकरण	**Gender and Socialization**
• जेण्डर सम्बंधी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य : समाजीकरण का सिद्धांत, जेण्डर विभेद, संरचनात्मक सिद्धांत, पुनर्रचनात्मक सिद्धांत • जेण्डर अस्मिता और समाजीकरण की प्रक्रियाएं : धर्म, परिवार, समाज, मीडिया, विद्यालय आदि की भूमिका	• Theoretical perspectives related to Gender: Socialization theory, Gender Difference, Structural Theory, Deconstructive theory • Gender Identities and Socialization Practices: Role of religion, family, society, media and School etc.

Unit-3	
जेण्डर अध्ययन : परिप्रेक्ष्यों का विकास एवं शिक्षक	**Gender Studies: perspective development & Teacher**
• जेण्डर से संबंधित शोधों का संदर्भ • जेण्डर सम्बंधी प्रमुख सामाजिक सुधार आंदोलनों की समझ • जेण्डर समानता में शिक्षा की भूमिका : लड़कियों के शिक्षा का महत्व • शिक्षक की परिवर्तनकारी एवं जेण्डर संवेदनशील भूमिका	• Context of researches related to gender • Landmarks from social reforms movements; focus on women's experiences of education, legistative • Role of Education for gender equality: Importance of schooling girls • Teacher: as an agent of change; gender sensitive professional

C-8
Knowledge and Curriculum
ज्ञान और पाठ्यचर्या

Unit-1	
शिक्षा के प्रयोजन	**Purpose of Education**
• शिक्षा के प्रयोजन : व्यक्तिगत या सामाजिक विकास; ज्ञान या सूचना देना; भौतिक या आध्यात्मिक विकास, उपयोगिता की कसौटी, शिक्षा का राजनैतिक एजेण्डा • शिक्षा और मूल्य : शिक्षा के प्रयोजन में मूल्यों का स्थान; मूल्य क्या हैं? वे सापेक्ष हैं या निरपेक्ष? उनको कौन निर्धारित करता है? संदर्भों के साथ वे कैसे बदलते हैं और इससे शिक्षा के प्रयोजन पर क्या प्रभाव पड़ता है • शिक्षा और संवैधानिक मूल्य : लोकतंत्र, समानता, स्वतंत्रता, धर्मनिरपेक्षता और सामाजिक न्याय	• Purpose of Education: individual or social development, providing knowledge or information, materialistic or spiritual development; criteria for worthiness and political agenda of education • Education and Values: Place of value in the purpose of education; what are values? Are they relative or absolute? Who creates values? How values change according to context and how they impact the purpose of education • Education and Constitutional Values: democracy, equality, liberty, secularism and social justice

शिक्षा क्यों है और इसके लक्ष्य एवं उद्देश्य क्या हैं? इन प्रश्नों पर यह इकाई केन्द्रित है। जिस प्रकार शिक्षा हमेशा एक जैसी नहीं रही, वैसे हीं इसके प्रयोजन भी एक जैसे नहीं रहे। सामाजिक परिवर्तनों और चिंतन के परिप्रेक्ष्यों के अनुसार शिक्षा के प्रयोजन में कई बदलाव आये। इस इकाई में उन परिप्रेक्ष्यों को साथ में लेकर शिक्षा के प्रयोजन की चर्चा की जाएगी जिसमें सामाजिक–संवैधानिक मूल्य और नीतियों का संदर्भ अहम माना गया है। ये परिप्रेक्ष्य हमारी शिक्षा व्यवस्था को लगातार प्रभावित करते रहते हैं। अतः इसके प्रति प्रशिक्षुओं में सजगता जरूरी है, तभी वह अपने शिक्षण में इन्हें शामिल कर पायेंगे।

Unit-2	
शिक्षा एवं पाठ्यचर्या का विश्लेषण	**Education & Curriculum analysis**
• स्वतंत्र भारत के प्रमुख नीतिगत दस्तावेजों के माध्यम से शिक्षा के लक्ष्यों एवं पाठ्यचर्या के विश्लेषण के आलोक में– राधाकृष्णन आयोग, मुदालियर आयोग, कोठारी आयोग, संस्कृत आयोग, राष्ट्रीय ज्ञान आयोग एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति • शिक्षा की चुनौतियाँ– समीक्षात्मक मूल्यांकन (नीति संबंधी परिपेक्ष में)	• Vision & Curriculum of education in post-independence major policy documents and their analysis –Radha Krishan Commission, Mudaliar commission, Kothari an Commission, Sanskrit Commission, National Knowledge Commission & National Policy of Education • Challenges of Education, Critical Evaluation (A Policy Perspective)

भारत में स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा की बदलती परिस्थितियों के अनुरूप शिक्षा व्यवस्था को पूर्ण गठित करने के लिए अनेक नीतिगत दस्तावेजों के माध्यम से शिक्षा के लक्ष्यों एवं पाठ्यचर्याओं के विश्लेषण के उपरान्त विभिन्न महत्वपूर्ण आयोगों की आवश्यकता पड़ी। इस इकाई में उपरोक्त स्वतंत्रता पश्चात आयोगों पर विस्तृत चर्चा की जानी है। साथ ही सांथ शिक्षा में आने वाले विभिन्न चुनौतियों का सामना एक शिक्षक के लिए महत्वपूर्ण होता है पर समीक्षात्मक मूल्यांकन किया जाना है।

Unit-3	
ज्ञान और जानना	**Knowledge and Knowing**
• शिक्षा, ज्ञान और दर्शनशास्त्र के अंतर्सम्बंधों की समझ • सूचना, धारणा और सत्य की अवधरणा तथा उनका ज्ञान के साथ सम्बंध की चर्चा • ज्ञानमीमांसा : प्रमुख विचारधाराएं (वाद) और भारतीय दर्शनशास्त्र • जानने की प्रक्रिया : जानने के विविध तरीकें; ज्ञान के निर्माण में पूर्वज्ञान और जाननेवाले की भूमिका; सामाजिक–सांस्कृतिक आयामों का जानने में भूमिका	• Understanding relation between education, knowledge and philosophy • Concept of information, belief and truth in relation to knowledge • Epistemology: Schools of thought (isms) and Indian Philosophy • Knowing Process : Different ways of knowing; the roles of knower and the known in knowledge construction; role of socio-cultural aspects in knowing

C-9

Assessment and Learning

आकलन और सीखना

Unit-1	
आकलन के आधार	**Base of Assessment**
• आधारभूत अवधारणाएं : आकलन, मूल्यांकन, मापन, परीक्षण, परीक्षा, रूपांतरित एवं समेकित मूल्यांकन • विभिन्न मतों के अनुसार आकलन के प्रयोजन : (अ) व्यवहारवादी, (ब) संरचनावादी, (स) सामाजिक–सांस्कृतिक पाराडाइम।	• Basic Concepts: assessment, evaluation, measurement, test, examination, formative and summative evaluation, • Purpose of assessment in different paradigms: (a) behaviourist (with its limited view on learning as behaviour), (b) constructivist paradigm and (c) socio-culturalist paradigm;

इस इकाई में आकलन से सम्बंधित विभिन्न आधारभूत अवधारणाओं की समझ बनायी जाएगी। साथ ही, उन वैचारिक दृष्टिकोणों को भी समझा जाएगा जो आलकन की अवधारणा को अलग–अलग रूप में परिभाषित करते हैं। इस इकाई का जोर बुनियादी समझ को विकसित करने पर होगा, जिसका विस्तार आगे की इकाइयों में किया जाएगा।

Unit-2	
सीखने की प्रक्रिया एवं आकलन	**Assessment in the Process of Learning**
• 'सीखने का आकलन' और 'सीखने के लिए आकलन' में अंतर; शिक्षणशास्त्रीय निर्णय लेने के लिए आकलन। • सीखने की प्रक्रिया में आकलन : बदलती अवधारणाएं एवं उनका विश्लेषण; सतत एवं व्यापक मूल्यांकन की अवधारणा एवं ग्रेडिंग; आकलन के लिए चिंतन–मनन एवं लचीलापन	• Differences between 'assessment of learning' and 'assessment for learning'; assessment as a basis for taking pedagogic decisions • Assessment in the Process of learning: Change in concepts and its analysis: Continuous and comprehensive assessment and grading; reflection on originality and initiative, flexibility for assessment

सीखने की प्रक्रिया में आकलन का स्वरूप भी बदलता रहा है। साथ ही, सीखने और आकलन के बीच के सम्बंध में भी कई बदलाव आए हैं। यह इकाई उनपर बात करेगी। समकालीन विद्यालयी व्यवस्था में सीखने और आकलन का जो स्वरूप है, उसपर विशेष बल दिया जाएगा।

Unit-3	
आकलन के वर्तमान तरीकों का विश्लेषण	**Analyzing existing practices of Assessment**
• वर्तमान में प्रचलित मूल्यांकन के तरीकों एंव मान्यताओं का आलोचनात्मक समीक्षा : सफल या विफल करने के लिए परीक्षा; सामाजिक एवं सांस्कृतिक पदानुक्रम बनाने के लिए परम्परागत परीक्षा; विद्यालय पर परीक्षा–उन्मुख शिक्षण का प्रभाव; विभिन्न परीक्षा स्वरूपों जैसे प्रश्नोत्तरी–प्रतियोगिता, असेट ओलंपियाड, आदि की आलोचनात्मक एवं समझ। • शिक्षार्थियों के सीखने, मनोबल एवं अस्मिता पर आकलन के वर्तमान तरीकों का प्रभाव, बच्चों को 'तेज' या 'मंद' कहकर लेबल करने का गलत प्रभाव; प्राथमिक स्तर पर 'नो डिटेन्शन पॉलिसी' की आलोचनात्मक समझ	• A critical review of current evaluation practices and their assumptions: examination for selection or rejection; role of traditional examinations in maintaining social and cultural hierarchy; impact of examination-driven teaching on school culture and on pedagogy; Content-confined testing; critique of prevailing quiz culture and popular tests such as ASSET and Olympiad; commercialization of testing • Impact of the prevailing assessment practices on students' learning, their motivation and identity; detrimental effects of labeling students as slow or bright or declaring them failures; perspective behind no-detention policy in elementary grades under RTE

C-10
Creating an Inclusive School
समावेशी विद्यालय का निर्माण

प्रशिक्षुओं को समावेशी शिक्षा की समझ इसलिए होनी जरूरी है ताकि वे अपने विद्यालय में आनेवाले हर तरह के विद्यार्थी के साथ न्याय कर सकें। आज समावेशी शिक्षा के प्रति हर विद्यालय की प्रतिबद्धता को मजबूत किया जा रहा है ताकि कोई भी बच्चा सीखने के वास्तविक अवसर से वंचित न रह जाए। लेकिन, यह प्रतिबद्धता हमेशा से नहीं थी। इस अवधारणा के विकास का अपना एक इतिहास रहा है जिसकी समझ हम इस इकाई में बनाएंगे। समावेशी शिक्षा से सम्बंधित कुछ नीतिगत दस्तावेजों के कुछ अंशों का विश्लेषण भी इस इकाई में किया जाएगा। लेकिन सबसे महत्वपूर्ण है समावेशी शिक्षा के चिंतन को विद्यालयी स्तर पर उतार पाने का नजरिया। अतः एक समावेशी विद्यालय की संकल्पना क्या हो सकती है, इसके मूर्त एवं अमूर्त पक्षों के बारे में चर्चा की जाएगी। साथ ही, समावेशी शिक्षा को लेकर विद्यालयों की समकालीन स्थिति और चुनातियां क्या हैं, इसकी बात भी यहां की जाएगी।

Unit-1	
समावेशी शिक्षा एवं नीतियां	**Inclusive School and Policies**
• समावेशी शिक्षा : अवधारणा के विकास की समझ; विशिष्ट शिक्षा एवं समेकित शिक्षा के संदर्भ में तुलनात्मक समझ • सम्बद्ध नीतिगत दस्तावेजों (अंतराष्ट्रीय, राष्ट्रीय व राज्यीय) का विश्लेषण	• Inclusive Education: understanding the development of the concept; comparative understanding with special education and integrated education • Analysis of related policy documents: International, National and State level

Unit-2	
समावेशी विद्यालय का निर्माण	**Creating an Inclusive School**
• शिक्षार्थियों में विविधता की समझ तथा इसका महत्व • समावेशी विद्यालय की संकल्पना : अवसंरचना और पहुंच, मानव संसाधन, विविधता के प्रति विद्यालय का दृष्टिकोण • समावेशी शिक्षा के लिए विद्यालयों की तैयारी : भारत व बिहार विशेष का संदर्भ; विद्यालय, समुदाय व राज्य की भूमिका	• Understanding diversities in learners and its importance • Concept of an inclusive school: infrastructure and accessibility, human resources, school attitude • School's readiness for Inclusive approach: Role of School, community and State in the special context of India and Bihar.

Unit-3	
समावेशी कक्षाकक्ष के लिए शिक्षक एवं शिक्षणशास्त्र	**Teacher and Pedagogy for Inclusive Classroom**
• समावेशी कक्षाकक्ष : प्रक्रियाओं की समझ • विषय और शिक्षणशास्त्र : समावेशीकरण की प्रकृति • शिक्षकों में समावेशी कक्षाकक्ष की अवधारणा • कक्षाकक्ष के लिए शिक्षकों की तैयारी	• Inclusive Classroom : Understanding the practices • Subject & Pedagogy: Nature of inclusion • Teachers' notion of inclusive classroom • Teachers' preparation for inclusive practices

Enhancing Professional Capacities (EPC) Courses

Code	Course Title		Marks		
			Practicum	Theory	Total
EPC-1	Reading and Reflection on Texts	1st year	10	40	50
EPC-2	Drama and Art in Education	1st year	10	40	50
EPC-3	Critical understanding of ICT	1st year	10	40	50
EPC-4	Understanding the self	2nd year	10	40	50

- Enhancing Professional Capacities (EPC) papers will be evaluated Internally.

EPC-1

Reading and Reflection on Texts

साहित्य का पठन एवं उस पर मनन

शिक्षा के साहित्य से तात्पर्य है ऐसे साहित्य से परिचय जो शिक्षा के विभिन्न आयामों पर विशेष प्रकाश डालता हो। वैसा साहित्य जो शिक्षा से संबंधित तमाम मुद्दों को समझने के लिए एक दृष्टिकोण देता हो तथा जिसे पढ़कर हमारी दृष्टि संवेदित होती हो। एक शिक्षक के लिए ऐसा साहित्य कहीं अधिक महत्त्वपूर्ण है। शिक्षा के साहित्य के माध्यम से प्राप्त होने वाली आलोचनात्मक समझ द्वारा एक शिक्षक विभिन्न शैक्षिक विमर्शों को कहीं बेहतर ढंग से समझ सकता है। अलग–अलग कालखंडों में शिक्षा के स्वरूप एवं उसमें हुए परिवर्तनों को जानना और साथ ही उस दौरान समाज के बदलते नजरिये को समग्रता से समझना भी शिक्षकों के लिए अपरिहार्य है। इनकी छवि विभिन्न भाषाओं में रचित साहित्यिक रचनाओं में देखी जा सकती है जो अपने समय की शिक्षा व्यवस्था से जुड़े विभिन्न मुद्दों का काव्य, लेखों, कहानियों, व्यंग्य आदि के माध्यम से परिलक्षित करते हैं। ऐसी रचनाएं शिक्षा के स्वरूप में आए प्रमुख बदलावों के विभिन्न पहलुओं को जानने एवं समझने के लिए आज भी प्रासंगिक हैं। ये रचनाएँ आज के शिक्षाशास्त्र की विषयवस्तु के अलग–अलग पहलुओं पर एक विशेष तरह का प्रकाश डालती हैं। इनके द्वारा शिक्षा के दर्शन, समाजशास्त्र एवं मनोविज्ञान की आपसी समझ पर हुए प्रभावों को जाना व समझा जा सकता है। इसे जानने और समझने का प्रयास प्रशिक्षुओं की चिन्तन प्रक्रिया को व्यापक करने में सहायक सिद्ध होगा। यह विषय उनके लिए संवेदनाओं के प्रशिक्षण का मार्ग प्रशस्त करेगा। इस विषय में चार बिन्दु बहुत महत्वपूर्ण हैं। पहला है ' रचना का काल संदर्भ' जिसका तात्पर्य है रचना के विषयवस्तु/प्रसंग को काल–खण्ड में स्थापित करके समझना; समय के अनुसार शिक्षा के बदलते स्वरूप को समझना; काल–विशेष में शिक्षा से सामाजिक अपेक्षाओं व प्रभावों की समीक्षा करना। दूसरा बिन्दु है 'रचना की मीमांसा' जिससे तात्पर्य है कि किसी साहित्य से शिक्षा के किस पहलू पर प्रकाश पड़ता है, इसे समझना। उदाहरणतः समवय समूह सम्बंध, शिक्षक की प्रकृति, समाज की शिक्षा के ऊपर दृष्टिकोण, बाल मानस, इत्यादि। तीसरा बिन्दु है 'रचना से अनुभूति' जिससे तात्पर्य है कि पाठक के रूप में वह आपकी किन अनुभूतियों अथवा स्मृति संदर्भों को जगाती हैं अर्थात ऐसे प्रसंग जो आपके अनुभवों से मेल खाते हो। चौथा बिन्दु है 'विवेचना की बहुआयामिता' से तात्पर्य है स्वतंत्र विवेचना का हक। यानि, प्रत्येक पाठक अपने अनुसार पढ़े गये रचनाओं की विवेचना करे। किसी भी प्रकार का मानक विवेचना पाठक पर आरोपित न की जाये।

Unit-1	
प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्य	**Ancient and Medieval Literature**
इस इकाई में प्राचीन एवं मध्यकाल के कुछ वैसे साहित्यों का पठन किया जाएगा जो उस समय की शिक्षा को दर्शाते हैं। इस दिशा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है : • उपनिषदों से संवाद अंश • पंचतंत्र की कहानियां • बौद्ध साहित्य से कथाएं (जातक, थेरी एवं थेर गाथा) • जैन साहित्य से कथाएं • गुलिंस्ता–बोस्ता से कथाएं एवं अन्य साहित्य इस इकाई में और भी कई प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यों को जोड़कर सवंर्धित किया जा सकता है।	This unit is focused on reading some ancient and medieval literatures which are relevant to understand education of their time. The following literatures are identified as key readings: • Dialogue from *Upanishada* • Stories from *Panchtantra* • Stories from Buddhist literature (*Jataka, Theri & Ther Gatha*) • Stories from Jain literature • Stories from *Gulinsta-Bosta* and other related literature. *The unit is flexible in nature. Many more ancient and medieval literatures can be added to this unit to make it more enriched.*

इस इकाई में जिन प्राचीन एवं मध्यकालीन साहित्यों का उल्लेख किया गया है, उनसे सिर्फ कुछ चयनित अंशों का ही इस पाठ्यक्रम के अंतर्गत अध्ययन किया जाएगा जिससे उस काल की शिक्षा को समझने में मदद मिलती है।

Unit-2	
आधुनिक और समकालीन साहित्य	**Modern and Contemporary Literature**
इस इकाई में वैसे आधुनिक व समकालीन साहित्यों को पढ़ने पर जोर है जिसमें शिक्षा के मुद्दों को सार्थक तरीके से उठाया गया है। इस इकाई में विभिन्न भाषाओं व सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों से साहित्यों को प्रस्तुत किया गया है। इस दिशा में, निम्नलिखित साहित्यों को मूल अध्ययन के लिए चुना गया है • विनोबा भावे की रचना 'शिक्षक' • प्रो. डी. एस. कोठारी द्वारा रचित 'शिक्षा और जीवन मूल्य' • महादेवी वर्मा कृत 'शिक्षा का उद्देश्य' • श्रीलाल शुक्ल द्वारा रचित 'रागदरबारी' के अंश • कृष्ण कुमार द्वारा रचित 'चूड़ी बाजार में लड़की' से अभिमन्यु की शिक्षा' वाला अंश • प्रो. अनिल सदगोपाल का लेख 'साक्षरता: राष्ट्रीय ध्येय या शैक्षिक गापदण्ड' • अवधेश प्रीत द्वारा रचित 'तालीम' • तुलसीराम द्वारा रचित 'मुर्दहिया' • डॉ. ज्ञानदेव मणि त्रिपाठी का लेख 'शिक्षा की ललक' • बिरेन्द्र सिंह रावत का लेख 'क्या कहते हैं सवाल'	This unit is related to read some modern and cotemporary literatures which have raised the issues of education meaningfully. The unit contains literatures from different languages and socio-cultural contexts, so that it will provide an enriched space for reflection. The following literares are identified as key readings : • *'Shikshak'* by Binova Bhave • *'Shiksha aur Jeevan Mulya'* by Prof. D.S. Kothari • *'Shiksha ka Uddeshya'* by Mahadevi Verma • Excerpts from *'Ragdarbari'* by Shrilal Shukl • *'Abhimanyu ki Shiksha'* from 'Churi Bazaar mein Ladaki' written by Krishna Kumar • *'Saksharata: Rashtriya Dhyey ya Shaikshik Maapdand'* by Prof. Anil Sadgopal • *'Taleem'* story written by Avdhesh Preet • *'Murdahiya'* written by Tulsiram • *'Ek School ka Bayan'* by Dr. Gyandeo Mani Tripathi • *'Shiksha ki Lalak'* by Dr. Gyandeo Mani Tripathi • *'Kya kahate hain Savaal'* by Birendra Singh Rawat *The development of contemporary literatures is limitless. Therefore, besides these key readings, there is ample space to add many more new contemporary literatures in this unit.*

शिक्षा की समकालीन समझ के नजरिए से यह इकाई विशेष महत्व का है। इसमें जिन साहित्यों को लिया गया है, उनके अध्ययन से शिक्षा और समाज के भिन्न–भिन्न मुद्दों की समझ मिलेगी।

Unit-3	
स्थानीय साहित्य	**Local Literature (Bhojpuri)**
यह इकाई शिक्षा के मुद्दों से सम्बंधित स्थानीय साहित्यों के पठन पर आधारित है, जो निम्नलिखित हो सकते है : • स्थानीय कथाएं • लोकोक्तियां • लोक गीत • जीवन कथाएं संस्थान अपने स्तर पर इन साहित्यों का संकलन करेगी जिसमें इसके शिक्षक एवं प्रशिक्षुओं की भूमिका होगी।	This unit is focused on collecting and reading local literatures related to education and its issues. The literatures can be : • local stories • folktales • folk songs • life stories ***The institution will make a collection of above mentioned literatures at its level with the help of the trainee teachers and faculties. They will search the local literature resources.***

शिक्षक को अपने स्थानीय संस्कृति के प्रति सजग बनाने तथा स्थानीय स्तर के शिक्षायी मुद्दों को अकादमिक रूप से समझने के उद्देश्य से इस इकाई की कल्पना की गई है। इसलिए, यह एक ऐसी इकाई है जिसकी सामग्री को शिक्षकों एवं प्रशिक्षुओं द्वारा स्वयं खोजकर और फिर उनका संकलन करके अध्ययन करना है। इसमे उन तमाम स्थानीय साहित्यों को शामिल करने की सम्भावना है जो समाज में तो मौजूद हैं लेकिन शिक्षक के चिंतन का विषय नहीं बन पाए हैं।

EPC-2

Drama and Art in Education

शिक्षा में नाट्य और कला

हमारे समाज को प्राचीन काल से ही इसका गहरा बोध है कि मानव की शिक्षा में कला का विशेष स्थान है और बच्चों से तो इसका गहरा संबंध है। प्लेटो ने लिखा है कि "हमें ऐसे कलाकारों और शिल्पकारों की खोज करते रहना चाहिए जो इस जानकारी के माहिर हैं कि प्रकृति में क्या सुन्दर है। तभी हमारे नवयुवक स्वस्थ वातावरण में रहकर समझेंगे कि जीवन में वह क्या है जो उनके वातावरण को स्वस्थ बनाता है। हमें यह देखना है कि उन्हें बचपन से ही पहचान हो कि क्या सुन्दर है और क्या उचित। इसीलिए शिक्षा का चरण बड़ा निर्णायक है।" इस प्रकार कला एवं कला शिक्षा 'शैक्षिक प्रक्रिया का एक महत्त्वपूर्ण आयाम है और इसके महत्त्व को अब शिक्षा के हर स्तर पर स्वीकार किया जाने लगा है। इसके बावजूद बिहार या देश के अन्य किसी भाग में इसे व्यवहार में उतारने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया है। आमतौर पर, कला को पाठ्येत्तर गतिविधि समझा जाता है, वह भी बगैर किसी महत्त्व के, जिसका इस्तेमाल कुछ खास अवसरों पर महज दिखाने भर के लिए होता है। अधिकांश माता–पिता और शिक्षक/शिक्षिका कला और खेल को अध्ययन से अनावश्यक विचलन मानते हैं, मगर शिक्षार्थियों का मन सामान्यतः आकादमिक विषयों के अध्ययन से कहीं ज्यादा इन्हीं दोनों में लगता है। इसके सृजनात्मक या सौंदर्यशास्त्रीय पहलू सदा उपेक्षित रह जाते हैं। यदि देखा जाए तो कला और शिल्प की शिक्षा, शिक्षार्थियों के व्यक्तित्व के विकास का उपयोगी जरिया हो सकती है। व्यक्तित्व के विकास, सौंदर्यबोध के विकास और प्रवृत्तियों व मूल्यों के निर्माण में कला का प्रत्यक्ष योगदान होता है। शिक्षाशास्त्रीय उद्देश्य से कला, शिल्प और संस्कृति का अनेक तरीके से उपयोग किया जा सकता है– संसाधन के रूप में, माध्यम के रूप में और विकसित किए जा सकने वाले कौशल के रूप में। कलाएँ जहाँ हमारे जीवन और अधिगम को समृद्ध बनाते हैं, वहीं इनका उपयोग शिक्षण–अधिगम प्रक्रियाओं को सरल, सुगम, आनन्ददायी और रोचक बनाने में भी किया जा सकता है। इस विषय के विभिन्न इकाइयों के माध्यम से हम नाट्य और कला शिक्षा के बारे में चर्चा करेंगे। नाट्य एक ऐसी विधा है जो शिक्षण को जीवन्त और सरस बना सकती है। अतः प्रशिक्षुओं की इसकी सैद्धांतिक एवं व्यावहारिक समझ पहली इकाई में दी जाएगी। इसके अलावा अन्य दृश्य कलाओं व शिल्पों को भी समझना तथा शिक्षा में उनके प्रयोग को सुनिश्चित करने पर भी दूसरी एवं तीसरी इकाई में चर्चा की जाएगी। साथ ही यह स्पष्ट करना होगा कि यह एक प्रायोगिक विषय है। अतः सिर्फ सिद्धांतों को समझने मात्र से काम नहीं चलेगा बल्कि उनका प्रयोग जरूरी है।

Unit-1	
प्रदर्शन कला के रूप में नाट्य	**Drama as Performing Art**
• नाट्य : अवधारणा की समझ और शिक्षा में इसका महत्व • नाट्य एक शिक्षणशास्त्र के रूप में • नाट्य का आयोजन : तैयारी और संसाधन, ड्रैमेटिक सोसाईटी या नाट्य समूह का निर्माण • नाट्य के स्वरूप : एकल, समूह • नाटक करना : कहानी, संवाद, चरित्र, संकेत, मंच की सजावट, रौशनी, भिन्न–भिन्न स्थितियों का निर्माण करना • भारतीय और क्षेत्रीय नाट्य परम्पराओं का ज्ञान • शिक्षार्थियों में नाट्य कला को प्रोत्साहित करना • नाट्य प्रदर्शन की समीक्षा और आकलन	• Understanding the concept of Drama and its relevance for Education • Drama as a pedagogy • Organizing Drama: preparatory activities and resources, dramatic society • Forms of Drama: Solo, group • Playing Drama: Story, dialogue, characters, symbols, decoration of floor, lighting, creating different situations. • Knowledge of Indian and regional drama traditions • Appreciating art of Drama in learners • Review and assessment of performing art of 'Drama'

Unit-2	
दृश्य कला एवं शिल्प	**Visual Arts and Crafts**
• दृश्य कला एवं शिल्प की समझ तथा शिक्षा में उनका महत्व • दृश्य कला एवं शिल्प एक शिक्षण–शास्त्र के रूप में • दृश्य कला एवं शिल्प : विविध स्वरूप, बुनियादी संसाधन तथा उनकी उपयोगिता • क्षेत्रीय लोक कलाओं एवं शिल्प परम्पराओं का ज्ञान • समकालीन भारतीय दृश्य कलाओं, शिल्पों एवं कलाकारों का ज्ञान • शिक्षार्थियों में दृश्य कला एवं शिल्प को प्रोत्साहित करना • दृश्य कला एवं शिल्प की समीक्षा और आकलन	• Understanding visual Arts and Crafts with their relevance for Education • Visual Arts and Crafts as pedagogy • Visual Arts and Crafts: different forms, basic resources and their use • Knowledge of Indian Craft Traditions and regional folk arts • Knowledge of Indian Contemporary Visual Arts & crafts and Artists • Appreciating visual arts and crafts in learners • Review and assessment of visual arts and crafts

Unit-3	
कला–आधारित अधिगम और शिक्षक की भूमिका	**Art-aided Learning and role of a teacher**
• नाट्य कला को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव • कला एवं शिल्प को विद्यालयी पाठ्यचर्या के साथ जुड़ाव • विद्यालय और कक्षाकक्ष को कला–आधारित अधिगम के जगह के रूप में देखना • कला आधारित अधिगम के लिए शिक्षक की तैयारी	• Integrating Drama with School Curriculum • Integrating Arts and Crafts with School Curriculum • Visualizing School and Classroom as a space for art aided learning • Preparation of teacher for art aided learning

Suggested readings:

- Aanderson, T. And Milbrandet,M.K. (2004). "Art For Life : Authentic Instruction In Art", Mcgraw Hill.
- Armstrong, M. (1980). The practice of art and the growth of understanding. In Closely observed children: The diary of a primary classroom (pp. 131–170). Writers & Readers.
- Davis, J.H. (2008). Why our schools need the arts. New York: Teachers College Press.
- Heathcote, D., & Bolton, G. (1994). Drama for learning: Dorothy Heathcote's mantle of the expert approach to education. Portsmouth. NH: Heinemann Press.
- Jeswani, K. K. (1966). Art in Education. Atma Ram and Sons, Delhi.
- Jeswani, K. K. (1965). Teaching and Appreciation of Art In Schools, . Atma Ram and Sons, Delhi, 1965.
- John, B., Yogin, C., & Chawla, R. (2007). Playing for real: Using drama in the classroom. Macmillan.
- Lakhyani,Susmita (2012). "Art Creativity and Art Education", Lap Lambert Academic Publishing, ISBN-978-3-8473-7821-1.
- Lowenfeld, Victor (1952). Creative and Mental Growth. Macmillan Company, New York.
- Mago, P.N. (2000). Contemporary Art in India - A Perspective. National Book Trust, New Delhi, India. 2000.
- Prasad, Devi (1998). Art as the basis of education. National Book Trust. Retrieved from http://www.vidyaonline.net/list.php?pageNum_books=2&totalRows_books=62&l2=b1%20&l1=b1%20&l3=b1tp

EPC-3

Critical Understanding of ICT

आई.सी.टी. की आलोचनात्मक समझ

वर्तमान समय में सूचना एवं संचार तकनीकी हमारे सामाजिक अंतःक्रिया का एक आवश्यक अंग बन चुकी है। शिक्षा में तकनीकी का इस्तेमाल कोई नई बात नहीं है। संचार प्रौद्योगिकी के विभिन्न अन्वेषणों के द्वारा शिक्षा व्यवस्था में क्रान्तिकारी बदलाव लाये जा रहे हैं। आज अनेक प्रकार के सूचना व संचार तकनीक समर्थित शिक्षा व अध्यापन विधियों का प्रयोग शिक्षार्थियों के व्यक्तिगत अनुभव, अभ्यास और ज्ञान को सवंर्द्धित करने के लिये किया जा रहा है। इन तकनीकों के कारण शिक्षा में हो रहे नवाचार के साथ–साथ सूदूर क्षेत्रों तक शिक्षा का प्रसार भी हो रहा है। सूचना व संचार तकनीक के विभिन्न माध्यमों द्वारा सूचनाओं के संग्रहण, संचयन, सुगम उपयोग तथा तेजी से आदान–प्रदान की सुविधा है। शिक्षा के क्षेत्र में नई संचार तकनीकों के उपयोग ने शिक्षक की भूमिका को सवंर्धित, षिक्षण में अद्यतन ज्ञान के समावेषन, बच्चों में प्रभावकारी अधिगम को उत्साहित करने का काम किया है। साथ ही साथ, तकनीकी के प्रयोग ने शिक्षक के अन्य कार्यों जैसे मूल्यांकन, रिकार्डों के सुगम संधारण, अभिभावकों से सम्पर्क, आदि को सरल एवं प्रभावकारी बनाया जा सकता है। विषिष्ट आवष्यकता वाले बच्चों की शिक्षा के लिए भी सूचना व संचार तकनीक का विषेष महत्त्व है। एक अध्यापक इस तकनीक के कुषल प्रयोग द्वारा अपने कार्यों को व्यवस्थित तथा अपने षिक्षण को प्रभावी बना सकता है। आई.सी.टी. तकनीकी का षिक्षण अधिगम कार्यों में उपयोग के लिये यह आवष्यक है कि शिक्षकों में इसके प्रयोग से षिक्षण कौषल की क्षमता विकसित की जाये। इस विषयपत्र के विषयवस्तु के माध्यम से प्रशिक्षु नवीन आई.सी.टी. संसाधनों को शैक्षिक प्रक्रियाओं में प्रयोग करने की समझ विकसित कर पाएंगे। यहां यह स्पष्ट करना है कि यह मूलतः एक प्रायोगिक विषय है। अतः इसके लिए सैद्धांतिक समझ के साथ–साथ प्रयोगों को करना बहुत महत्वपूर्ण है जिसकी अपेक्षा प्रशिक्षुओं से है।

Unit-1	
सूचना एवं संचार तकनीकी (आई.सी.टी.) से परिचय	Introduction to Information & Communication Technology (ICT)
• सूचना एवं संचार तकनीकी : अवधारणा एवं शिक्षा के लिए महत्व • सूचना एवं संचार तकनीकी–लक्ष्य एंव उद्देश्य • सूचना तकनीकी का अर्थ, आवश्यकताएं एवं भारत में आई0 सी0टी0ई0 शिक्षा का विकास (सूचना सम्प्रेषण तकनीकी के पक्ष में) • सूचना एवं संचार प्रौधोगिकी के साधन – माध्यम, बहुमाध्यम शिक्षा में सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी की भूमिका • टेली कान्फ्रेंसिंग, कम्प्यूटर, कम्प्यूटर सहायक अधिगम तथा शिक्षण एवं इन्टरनेट, इलेक्ट्रॉनिक मेल	• Concepts of ICT and its relevance for Education • Aims and objectives of ICT. • Meaning , Needs and Development of Information Techonology in Education in India (Its relevance for Education) • Tools of ICT – Media, Multimedia Role of Information and communication technology in Education • Tele Çonfrencing, Computer, Computer Assisted Learning and Teaching & Internet, Electronic mail

Unit-2	
कम्प्यूटर की समझ	Understanding Computer
• परम्परागत एवं आधुनिक सूचना तथा सम्प्रेषण तकनीकियाँ, सूचना एवं सम्प्रेषण तकनीकी के लाभ एवं उपयोगिता • ई–लर्निंग की प्रकृति, विशेषताएं, विभिन्न प्रारूप एवं शैलियाँ • ई–विषय वस्तु का वर्तमान में शिक्षा में प्रयोग, ई–मैग्जीन, ई–जर्नल्स, एडूकॉम्प स्मार्ट क्लास कार्यक्रम	• Traditional and Modern ICT'S, Use and Advantages of ICT • Nature , Characteristics, Modes and Styles of E-Learning • Uses of E-Content in present scenerio, E-Magazines, E-Journals, Programmes of Educomp Smart Classes

• कक्षा शिक्षण के लिए पी.पी.टी., स्लाईड्स बनाना और उनका प्रजेन्टेशन करना • शिक्षा में समाचार पत्र की उपयोगिता	• Mass-Media approach-Importance and its types, Over Head Projector, Radio, Tape-Recorder, Language Laboratory • Developing and presenting PPT, slide show for classroom use • Use of Newspaper in Education

Unit-3	
आई.सी.टी. समर्थित कक्षा की संकल्पना	Visualizing ICT-Supported classroom
• ऑडियो–विजुअल सामग्रियों के प्रयोग से कक्षा में सीखने को रोचक व सहज बनाना • कम्प्यूटर चलाने का ज्ञान : चालू व बन्द करना, इसके विभिन्न हार्डवेयर के कार्य की सामान्य जानकारी : कम्प्यूटर के डेस्कटॉप और मेमोरी के कार्यो की सामान्य जानकारी,वर्ड प्रोसेसिंग, पावर प्वाईट का प्रयोग, एक्सेल, स्प्रेडशीट, पेन्ट, फाईल, डॉक्यूमेंट, साफ्ट कॉपी, आदि का अर्थ एवं कार्य • कम्पयूटर एक लर्निंग टूल के रूप में : अपना ई–मेल आई. डी. बनाना, ई–मेल भेजना, इन्टरनेट पर उपयोगी सूचनाओं की खोज करने के तरीके को समझना तथा उसका उपयोग करना, डॉउनलोडिंग सीखना, ऑनलाईन फॉर्म भरना।	• Use of audio-visual materials for making classroom learning more interesting and easy • Functional knowledge of operating computers : on/off, simple knowledge of hardwares, simple knowledge of the function of desktop and memory, word processing, use of power point, excel, spread sheet, paint, file, document, soft copy,etc. • Computer as a learning tool : making own email ID, sending emails, Effective browsing of the internet for selecting relevant information, Downloading relevant material, online forms filling

Suggested readings:

- Centre for Educational Research and Innovation. (2007). Open Educational Resources – Conceptual Issues. In Giving Knowledge for Free: The Emergence of Educational Resources. OECD.
- Cheng, I., Safont, L.V. & Basu, A. (2009). *Multimedia in Education: Adaptive Learning and Testing*. New Jersey: World Scientific Pub Co Inc.
- Douglas Comer (2007). The Internet Book: Everything You Need to Know about Computer Networking and How the Internet Works, Prentice Hall, 2007
- *Free Software, Free Society: Selected Essays of Richard M. Stallman , digital book available on* www.notabug.com/2002/rms-essays.pdf
- Goswamy, B. P. (2006). *Shaikshik Takniki Evam Kaksha-Kaksh Prabandh*. Delhi: Swati Publication.
- *Information and Communication Technologies in Schools - A Handbook for Teachers or How ICT can create New Open Learning Environments* www.unesdoc.unesco.org/images/0013/001390/139028e.pdf
- *Information and Communication Technology Policy in School Education-2010* www.mhrd.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/ReviesICT_School.pdf
- James, K.L. (2003). The Internet: A User's Guide. Prentice Hall of India Pvt. Ltd: New Delhi
- Jonassen, D.H. (ed) (2003). *Learning to Solve Problems with Technology: A Constructivist Perspective*, (Edn 2). California: Merrill.
- Kanvaria, V. K. (2014). A comprehension on educational technology and ICT for education. New Delhi: GBO. (Retrieved from http://www.amazon.in/Comprehension- Educational-Technology-ICT-Education-ebook/dp/B00VV8KYZ6/ref=pd_rhf_se_p_img_1)
- MHRD. (2012). National policy on information and communication technology (ICT) in school education. MHRD, Government of India.
- Mishra, S.(Ed.) (2009). STRIDE Hand Book 08: E-learning. IGNOU : New Delhi. Available at *http://webserver.ignou.ac.in/institute/STRIDE_Hb8_webCD/STRIDE_Hb8_index.html*
- *National Mission in Education through ICT:* www.iitg.ernet.in/cet/MissionDocument_20Feb09.pdf
- Singh, Y.K., Nath, Ruchika (2005). Teaching of Computer Science New Delhi: APH Publishing House.
- Song, H. &. (2010). Handbook of Research on Human Performance and Instructional Technology. Hershey: Information Science Reference

UNESCO (2015). Copyright. In Open Access for Researchers: Intellectual Property Rights. Paris: UNESCO

EPC-4
Understanding the Self
स्वयं की समझ

समकालीन शिक्षायी विमर्श में एक नए विषय ने विशेष स्थान बनाया है, वह है–'अध्यापक की अस्मिता'। इस विषय के आने के पीछे यह समझ है कि अध्यापक अपने विद्यालय में जिस प्रकार का शिक्षण करते हैं उसमें उनकी अपनी मान्यताओं एवं धारणाओं की विशेष भूमिका होती है जो अध्यापक के व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन के अनुभव पर आधारित होते हैं। इस प्रकार, अध्यापकों के शिक्षण की समझ और उनके जीवन के मध्य अटूट जुड़ाव है। अतः, यदि विद्यालयों के लिए सक्षम अध्यापकों या शिक्षकों को निर्मित करना है तो अध्यापक की अस्मिता को महत्व देना बहुत महत्वपूर्ण है। इस सोंच के साथ समकालीन अध्यापक शिक्षा कार्यक्रमों में अध्यापक के अस्मिता के विमर्श को शामिल किया गया है। इस विषयपत्र की मान्यता है कि एक 'व्यक्ति' से 'शिक्षक या शिक्षिका' बनने की प्रक्रिया स्वयं में कई परिवर्तनों को लिये हुए है, जिसकी समझ प्रशिक्षुओं को होनी चाहिए ताकि वे अपने बदलती अस्मिता को आत्मसात कर सकें तथा इसके अनुरूप अपनी सोंच एवं धारणा में बदलाव ला सकें। अक्सर शिक्षकों द्वारा भी अपनी अस्मिता की अनदेखी की जाती रही है क्योंकि वे इसके प्रति सजग नहीं हैं, जिसके कारण वे एक सक्रिय अभिकर्ता के रूप में तैयार नहीं हो पाते हैं। आज, समाज में शिक्षक की प्रतिष्ठा का जो ह्रास हो रहा है उसके पीछे भी शिक्षक की अस्मिता की उपेक्षा एक बड़ा कारण है। अतः आवश्यकता है कि शिक्षकों की अस्मिता को गहराई से समझा जाए। शिक्षकों की अस्मिता को लेकर शोधों का एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य है जिसमें शिक्षक के जीवन, उसकी दिनचर्या, उसमें होनवाले बदलावों एवं उसको प्रभावित करनेवाले उन तमाम कारकों का अध्ययन किया जा रहा है जिससे कि शिक्षक के कार्य को समझने की दिशा मिल सके। साथ में, यह इसलिए भी विशेष है क्योंकि भारतीय संदर्भ में शिक्षकों की अस्मिता में समयानुसार एक बड़ा बदलाव आया है जो कि कई प्रकार के सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक एवं आर्थिक कारकों का प्रभाव है। अतः हमारे देश या राज्य में शिक्षक जिस प्रकार से अपने कार्य को समझते रहे हैं और समाज शिक्षकों के कार्य को जिस नजरिए से देखती रही है, उसमें कई परिवर्तन हुए हैं। इसका एक उदाहरण है शिक्षक का 'गुरू' से 'प्रोफेशनल' बनने तक की यात्रा, जिसका विश्लेषण इस विषयपत्र में किया जाएगा। यहाँ, अध्यापक की अस्मिता की संकल्पना को समझने के लिऐ मूलतः इसके तीन प्रमुख आयाम– वैयक्तिक, सामाजिक एवं वृत्तिक पर ध्यान दिया गया है। ये तीनों आयाम वास्तविक रूप में एक–दूसरे से अंतर्सम्बंधित एवं एक दूसरे से अति प्रभावित होते हैं। इनमें से किसी भी अस्मिता की संकल्पना हम एकांकी रूप से नहीं कर सकते हैं। अतः यदि अध्यापक को एक सक्रिय अभिकर्ता के रूप में तैयार करना है तो यह आवश्यक है कि उसकी अस्मिता के महत्व को समझा जाए तथा वृत्तिक विकास के संदर्भ में उसकी स्वयत्तता को स्थापित किया जाए, जिसकी समझ इस विषय से प्राप्त की जाएगी।

Unit-1

अस्मिता की समझ	Understanding Identity
• अस्मिता की अवधारणा तथा 'स्व' के साथ इसके सम्बंध की समझ; वैयक्तिक, सामाजिक व वृत्तिक अस्मिता की अवधारणा • बहुअस्मिता की समझ : व्यक्ति का संदर्भ, व्यक्तिगत धारणाएं एवं मान्यताएं • अपने वर्तमान अस्मिता के निर्माण में समाजीकरण की प्रक्रियाओं के प्रभावों की समझ • अपनी बदलती अस्मिता की समझ : 'विद्यार्थी' से 'वयस्क' और फिर 'विद्यार्थी–शिक्षक' • शिक्षक बनने की अपनी आकांक्षाओं व धारणाओं की समझ तथा अस्मिता निर्माण में उनकी भूमिका	• Understanding the concept of Idenity and its relation with 'Self'; Concept of personal, social and professional identity • Understating of multiple identities: the context of the person, understanding personal beliefs, • Understanding the impact of one's own socialization processes on the making of present identity • Awareness of one's own shifting identities as 'student', 'adult' and 'student-teacher' • Reflections on one's own aspirations in becoming a 'teacher' and its role in identity formation

Unit-2

शिक्षकों की अस्मिता	Identity of Teachers
• शिक्षकों की अस्मिता : समकालीन विमर्श; एक 'आदर्श' शिक्षक की संकल्पना • भारतीय परिदृश्य में शिक्षक की अस्मिता में आए बदलावों की समझ : 'गुरू' से 'प्रोफेशनल' तक का विकास • शिक्षक की अस्मिता को प्रभावित करनेवाले कारक : वैयक्तिक, सामाजिक–सांस्कृतिक, राजनैतिक, आर्थिक संदर्भ • शिक्षक की अस्मिता सम्बंधी सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य	• Teachers' identity: Contemporary discourse, Notion of an 'Ideal' teacher • Transition of teachers' identity in Indian scenario: from 'Guru' to 'Professional' • Major factors affecting teachers' identity: personal, socio-cultural, political, economical context • Theoretical perspectives related to teachers' identity

Unit-3

स्वयं में शिक्षक की 'अस्मिता' का विकास	Evolving an 'Identity' as a teacher
• अपने वर्तमान अस्मिता की समझ : वैयक्तिक व सामाजिक • शिक्षक के रूप में स्वयं को तैयार करना : शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों की भूमिका • अपने 'वृत्तिक अस्मिता' का विकास : अपनी समझ और कार्य का विश्लेषण करना • शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका की पहचान तथा इसके चुनौतियों की समझ ; विद्यालय संस्कृति की समझ • वृत्तिक सम्बंधी नीतिशास्त्र की समझ एवं उनका पालन • नेतृत्व गुण एवं भूमिका : मॉनिटर, कक्षा–शिक्षक, प्रधान शिक्षक, अकादमिक नेतृत्व • विद्यालय प्रबंधन एवं कार्य पर नेतृत्व शैली का प्रभाव	• Understanding own existing identity: personal and social • Developing as a Teacher: Role of Teacher Education Programmes • Developing own 'professional identity': Reflecting on own learning and action • Understanding role and challenges as a teacher: understanding school culture • Knowledge and practice of professional ethics • Leadership qualities and role: Monitor, Class-Teacher, Head of School, Academic leaderships • Leadership style and its impact on school management and functioning

Suggested readings:

- Andy Hargreaves (2000). Four Ages of Professionalism and Professional Learning. Teacher and Teaching: History and Practice, Vol. 6, No.2 pp 151-182
- Batra, P. (2005). Voice and agency of teachers: Missing link in national curriculum framework 2005. Economic and Political Weekly, 4347–4356.
- Beijaard, D, Meijer, P.C. & Verloop, N. (2004). Reconsidering re7Learning: A Constructivist Perspective. American Journal of Education, Vol. 100, No.3, pp.354-395

Courses related to Subject and Pedagogy

C-5

Course Code	Course Title		Marks		
			Internal	External	Total
C-5	Understanding Disciplines and Subjects	1st year	10	40	50

इस विषयपत्र में प्रशिक्षुओं को अपने माध्यमिक विद्यालयी स्तर की पाठ्यचर्या से अवगत होना है जिसमें वे विभिन्न ज्ञानानुशासनों को समझेंगे तथा उनके अंतर्गत आनेवाले विषयों से अवगत होंगे। साथ में, वे अपने विशिष्ट ज्ञानानुशासन एवं उससे सम्बंधित विषयों की विशेष समझ बनाएंगे जिसका शिक्षण उन्हें विद्यालय में करना है। इस विषयपत्र में निम्नलिखित कार्य किए जाने हैं :

1. विभिन्न बोर्डों के माध्यमिक स्तर के विद्यालयी पाठ्यचर्या का अध्ययन : इसमें एस.सी.ई.आर.टी. बिहार द्वारा विकसित पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम तथा एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली द्वारा विकसित पाठ्यचर्या–पाठ्यक्रम का अध्ययन।
2. अपने विशेष ज्ञानानुशासन यथा विज्ञान, गणित, सामाजिक विज्ञान आदि की प्रकृति एवं विषय वस्तु का अध्ययन।
3. चयनित ज्ञानानुशासन के अंतर्गत आनेवाले विषयों की प्रकृति एवं विषयवस्तु का अध्ययन।

C-7a & C-7b

Course Code	Course Title		Marks		
			Internal	External	Total
C-7a	Pedagogy of School Subject Part-I	1st year	10	40	50
C-7b	Pedagogy of School Subject Part-II	2nd year	10	40	50

निम्नलिखित विषय–समूह में से प्रत्येक वर्ग (Group) के प्रशिक्षुओं को प्रथम वर्ष में एक तथा द्वितीय वर्ष में भी एक विषय का चयन करना है।

कला वर्ग (Arts Group)

हिन्दी / संस्कृत / अंग्रेजी / उर्दू / मैथिली / परसियन / भोजपुरी / बंगाली / अरबी
इतिहास / नागरिक शास्त्र / भूगोल / अर्थशास्त्र / गृह विज्ञान

विज्ञान वर्ग (Science)

गणित / जीव विज्ञान
भौतिक विज्ञान / रसायन विज्ञान

वाणिज्य वर्ग (Commerce Group)

हिन्दी / अंग्रेजी / गणित
वाणिज्य / अर्थशास्त्र

OPTIONAL COURSE (OC)

Any one of the following

Course Code	Course Title		Marks		
			Internal	External	Total
C-11(a)	Basic Education	2nd Year	10	40	50
C-11(b)	Health, Yoga and Physical Education				
C-11(c)	Guidance and Counselling				
C-11(d)	Environmental Education				

Other relevant optional courses such as Teacher Education, Rural Education, etc. may also be introduced.

School Internship Programme

School Internship Program (Second Year)			Four month Tentatively October-January
Tasks	**Details**		**Marks**
1	School Diary		10
2	Classroom Observation		20
3	School Observation (Other activities, Interaction with school management or Meeting with SMCs, etc.		10
4	Teacher-Student Dialogue (बतकही)		10
5	Professional Ethics		10
6	Project Work or Action Research		40
7	Teaching Practice	Assessment by Mentor	100
	Learning Plan Transaction in Classroom	Internal Assessment	50
		Grand Total	**250**